माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
भूगोल	1	2	0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 – 767942

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	2	2	4	3	1	2	5	5

शब्दों में

दो	दो	दो	चार	तीन	एक	दो	पाँच	पाँच

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में X शब्दों में X

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक हाल

ग – परीक्षा की दिनांक 09 03 2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S.EXAM-2022

केन्द्र क्रमांक-241035

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Neetu Singh	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
R.S. MAHOR (U.M.S.) GOVT. H.S.S. RACHHED V.No.-2015112	अभय सिंह उ0मा0शि0 V.No.-2022165 शास0 उत्कृष्ट उ0मा0वि0 क्रं0-1 मुरैना

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्ताकों की प्रविष्ठी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्ताक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करे और न ही छात्र उपयोग में लें। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखे उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा। परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें → केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें → परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें →

पृष्ठ 3 के अंक

प्रश्न क्र.

प्र.1 का उ.

उ.1 सिंधु घाटी |

उ.2 यूरोप |

उ.3 पंचम क्रियाकलाप

उ.4 पूंजीवाद |

उ.5 भूमध्य सागरीय कृषि |

प्र.2 का उ.

उ.1 60 |

उ.2 सघन |

उ.3 असम |

उ.4 महाराष्ट्र |

उ.5 ब्रटलैण्ड आयोग |

उ.6 उच्च |

प्र.3 का उ.

1. भौगोलिक सूचना → यात्रियों का विवरण |
2. विकसित देश → मृत्युदर कम |
3. कृषि → प्राथमिक क्रियाएँ |
4. अंतर्राष्ट्रीय संचार → कृत्रिम उपग्रह |
5. आर्थिक विकास → श्रम संगठन द्वारा |

प्र.4 का उ.

उ.1 खाद्यान्न की कमी | रोजगार की समस्या, आवास की समस्या

उ.2 प्रशासनिक नगर |

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

उ॰ 3 जूट |

4 दूसरा |

उ॰ 5 सतत् पोषणीय विकास का उद्देश्य ऐसा विकास करना जिससे भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के ध्यान र

6 मध्यप्रदेश |

प्र॰ 5 का उ॰

उ॰ 1 सत्य |

उ॰ 2 सत्य

उ॰ 3 सत्य |

उ॰ 4 असत्य |

उ॰ 5 असत्य |

उ॰ 6. सत्य |

MPBSE

प्र॰ 6 का उ॰ [अथवा]

उ॰ 6. ग्रिफिथ टेलर को नव निश्चयवाद का जनक माना जाता है। इसमे 'रुको और जाओ' की परिकल्पना पर बल दिया गया है। इसके अनुसार प्रकृति भी मानव पर अपना प्रभाव डालती, उसे नियंत्रित करती है। उसी प्रकार मानव भी अपनी क्रियाकलापों द्वारा नहीं प्रकृति को प्रभावित करता है जैसे ग्लोबल वार्मिंग आदि।

प्र॰ 7 का उ॰

उ॰ प्राथमिक व्यवसाय के अन्तर्गत आने वाले व्यवसाय निम्न हैं -:

कृषि |

पशुपालन |

प्रश्न क्र.

3. आखेट।

4. भोजन संग्रह।

प्र.9.8 का उ. [अथवा]

उ.8. जब किसी वस्तु का क्रय-विक्रय और आदान प्रदान किन्ही दो देशों के बीच होता है तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किसी देश की विदेश नीति पर आधारित होता है। दो देशों के बीच के व्यापार को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

MPBSE

प्र.9.9 का उ.

उ.9 रोपण कृषि में विशेष प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इसमें एक ही प्रकार की फसल को एक, दो, तीन और चार वर्षों तक उगाया जाता है। रोपण कृषि के उदाहरण निम्न हैं :-

1. चाय।
2. गन्ना।

प्र.9.10 का उ. [अथवा]

उ.10 ग्रामीण बस्ती के लोग प्राथमिक क्रियाओं में लगे होते हैं। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। इसके अलावा पशुपालन, मत्स्य पालन, शिकार आदि कार्य भी करते हैं।

प्र.9.11 का उ.

उ.11 भारत में निम्न घनत्व वाले स्थान - (1) राजस्थान का मरुस्थलीय क्षेत्र (2). पूर्वी राज्यों का पहाड़ी क्षेत्र ये दोनों निम्न जनसंख्या वाले स्थान हैं।

प्रश्न क्र.

प्र०-प्र 12 का उ०

उ० 12 **मानव बस्ती** - एक प्रकार से साधारणतया: बसे स्थायी बसे हुए क्षेत्र को मानव बस्ती कहते हैं। बस्तियों के लोगों के क्रियाकलाप और व्यवसाय के आधार पर मानव बस्तियों को ग्रामीण और नगरीय बस्तियों में विभाजित किया जाता है।

प्र०-प्र 13 का उ० [अथवा]

उ० 13 पर्यावरण में विभिन्न प्रकार के दूषित पदार्थ मिलने से पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार निम्न हैं -

1. जल प्रदूषण।
2. वायु प्रदूषण।
3. ध्वनि प्रदूषण।
4. मृदा प्रदूषण।

प्र०-प्र 14 का उ०

उ० 14

	ग्रामीण जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या
1.	ग्रामीण जनसंख्या प्राथमिक कार्यों जैसे कृषि, पशुपालन मत्स्य पालन आदि कार्यों में लगी रहती है।	नगरीय जनसंख्या द्वितीयक तृतीयक, चतुर्थक क्रियाकलापों जैसे उद्योग, व्यापार, सेवा आदि कार्यों में लगी रहती है।

प्रश्न क्र.

ग्रामीण जनसंख्या के प्रतिशत घट रहे हैं। पलायन के कारण।	नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत बढ़ रहे हैं।
ग्रामीण जनसंख्या के पास शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन आदि की सुविधाएँ कम होती हैं।	नगरीय जनसंख्या के पास शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन उत्तम सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।

प्र०क्र० 15 का उ० (अथवा)

उ० अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख तीन आधार निम्न हैं -:

1. राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता।
2. आर्थिक विकास की प्रवस्था।
3. परिवहन का विकास।

1. राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता - विश्व के सभी स्थानों या देशों में संसाधनों का वितरण समान नहीं है। जलवायु, मृदा, भू-आकृति आदि कारणों से संसाधनों के वितरण में असमानता पाई जाती है। संसाधनों के असमान वितरण ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को आधार प्रदान किया है।

2. आर्थिक विकास की प्रवस्था - आर्थिक विकास की प्रवस्था ने भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को आधार प्रदान किया है। सभी देशों की आर्थिक विकास की प्रवस्था भिन्न होती है और यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रकार और स्वरूप को प्रभावित करती है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

परिवहन का विकास – परिवहन के तीव्र साधनों जैसे वायु परिवहन और रेल परिवहन आदि के विकास से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिला है। परिवहन का विकास भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को आधार प्रदान करता है।

प्र० 16 का उ०

उ० 16 भारत को स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से और स्वच्छता के स्तर में वृद्धि करने के उद्देश्य से 2 अक्टूबर 2014 को भारत सरकार द्वारा "स्वच्छ भारत मिशन" चलाया गया था। इसका प्रमुख उद्देश्य भारत को स्वच्छ बनाना था। स्वच्छ भारत मिशन के तीन उद्देश्य निम्न हैं -

(1) भारत के निवासियों को खुले में शौच न करने देने के लिए प्रत्येक घर में शौचालय बनाना, सार्वजनिक शौचालय का निर्माण करवाना और नगर निगम से निकलने वाले ठोस कचरे का वैज्ञानिक तकनीक से प्रबंधन करने के उपाय ढूंढना।

(2). भारत के ग्रामीण लोगों से होने वाले घरेलू प्रदूषण को रोकने के लिए शुद्ध ईंधन एल.पी.जी. के प्रयोग पर बल देना तथा इसे गांवों तक पहुँचाना ताकि पारम्परिक ईंधन कोयला, लकड़ी आदि की जगह एल.पी.जी. का प्रयोग हो।

(3). प्रदूषित जल के कारण होने वाली अनेक बीमारियों से बचने के लिए शुद्ध पीने के जल की उपलब्धता को प्रत्येक घर में सुनिश्चित करना आदि। प्रदूषित जल से लोगों को

M P B S E

अनेक बीमारियों को सामना करना पड़ता है। हैजा, मलेरिया आदि।

प्रश्न 11 का उत्तर

उ. खेत को जोतने, बोने और उस पर अन्न उगाने की प्रक्रिया को कृषि कहते हैं। भारतीय कृषि की प्रमुख समस्याओं को निम्नवत स्पष्ट किया जा सकता है -

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता - भारत में केवल तीन या चार महीने ही बारिश होती है। वर्ष का शेष भाग प्रायः सूखा बीतता है। भारत की कृषि मानसून की वर्षा पर निर्भर होती है। मानसून की अनिश्चितता और अनियमितता के कारण भारत की कृषि प्रभावित होती है। यह भारतीय कृषि की प्रमुख समस्या है।

2. निम्न उत्पादकता - अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कृषि की उत्पादकता का स्तर निम्न है। गेहूँ, चावल, कपास और तिलहन की उत्पादकता प्रायः जापान, अमेरिका और रूस से कम है। निम्न उत्पादकता के कारण भारतीय कृषि का पर्याप्त विकास नहीं हो सका, अतः यह भारतीय कृषि की एक और बड़ी समस्या है।

3. छोटे और बिखरे हुए खेत - भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण खेतों का बंटवारा होने से खेतों का आकार छोटा हो गया है और किसानों के खेत अलग-अलग स्थानों पर स्थित हैं। छोटे और बिखरे हुए खेत आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं होते हैं। अतः इन्हीं कारणों से भारत में कृषि को पर्याप्त बल नहीं मिल सका।

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्र०क्र० 18 का उ०

उ. भारत में अनेक प्रकार कृषि की जाती है जैसे निर्वाह कृषि मिश्रित कृषि, रोपण कृषि, डेयरी कृषि आदि इनका विवरण निम्न प्रकार है -

1. निर्वाह कृषि - निर्वाह कृषि के क्षेत्र में आने वाला किसान फसल उत्पादन का अधिकांश भाग स्वयं उपयोग करता है। निर्वाह कृषि को दो भागों में बांटा जा सकता है। (1) आदिकालीन निर्वाह कृषि (2) गहन निर्वाह कृषि

(1) आदिकालीन निर्वाह कृषि या स्थानांतरणशील कृषि - इस प्रकार की कृषि में किसी क्षेत्र के विशेष की वनस्पति को जलाकर खेती की जाती है और जली हुए राख उर्वरक का कार्य करती है। यह कृषि का पुराना या परम्परागत प्रकार है।

(2). गहन निर्वाह कृषि - गहन निर्वाह कृषि को भी दो भागों में बांटा जाता है -: चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि (2). चावल रहित गहन निर्वाह कृषि

(अ) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि - इसमें चावल की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। जनसंख्या घनत्व के कारण खेतों का आकार छोटा होता है और कृषक का पूरा परिवार इसमें लगा होता है। चावल की खेती भारत में प्रमुख रूप से पश्चिम बंगाल में की जाती है।

(ब) चावल रहित गहन निर्वाह कृषि - अनेक स्थान चावल की खेती के अनुकूल नहीं होते हैं जलवायु, मृदा आदि के कारण तो ऐसे स्थानों पर चावल

MPBSE

प्रश्न क्र.

रहित गहन निर्वाह कृषि की जाती है। यह कृषि भारत के गंगा सिंधु मैदानो के शुष्क और दक्षिण पश्चिमी क्षेत्रों में की जाती है। यहाँ गेहूँ, ज्वार, बाजरा आदि उगाया जाता है।

2. मिश्रित कृषि - मिश्रित कृषि में कृषि कार्य के साथ अन्य आर्थिक क्रियाएँ भी की जाती है जैसे पशुपालन आदि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के कार्य के साथ पशुपालन का कार्य भी किया जाता है।

3. रोपण कृषि - भारत में रोपण कृषि भी की जाती है। भारत की प्रमुख रोपण फसल चाय है। भारत में चाय का उत्पादन उच्च स्तर पर होता है। असम भारत का प्रथम चाय उत्पादक राज्य है।

4. व्यापारिक कृषि - व्यापारिक कृषि को मुद्रादायिनी कृषि भी कहा जाता है। इसका उत्पादन नगद लाभ की दृष्टि से किया जाता है। भारत में भी व्यापारिक कृषि की जाती है।

5. बागवानी कृषि - भारत मे बागवानी कृषि भी की जाती है इसमे उद्यान का विकास, फूलों की कृषि की जाती है।

6. शुष्क भूमि कृषि - भारत मे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में शुष्क भूमि कृषि की जाती है। ज्वार बाजरा आदि प्रमुख फसलें है।

7. गीली भूमि कृषि - जहाँ अत्याधिक वर्षा होती है, वहाँ आर्द्र कृषि या गीली भूमि कृषि की जाती है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र०.५।७ का उ०.

MPBSE

Roll No. .....

Question No. 19
प्रश्न नं. 19

World Map

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

मु०पृ० 20का30.

MPBSE

Question No. 20
प्रश्न नं. 20

Roll No. .....